

शेख़ फ़रीद - सबद १०
फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ॥
सलोक, शेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७८

फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ॥
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नींवां करि देखु ॥६॥

सार: बुद्धिमान और विनम्र व्यक्ति दूसरों की आलोचना या निंदा करने से बचते हैं। वह समझते हैं कि यद्यपि यह दृष्टिकोण चुनौतीपूर्ण हो सकता है, यह व्यक्तिगत और सामाजिक रूप से सशक्तिकरण प्रदान करता है। एक अधिक समृद्ध और दयालु दुनिया के लिए जितना बेहतर हम खुद को समझते और अपनाते हैं उतना ही अधिक हम स्वीकृति और सच्चे संबंधों का वातावरण बना सकते हैं।

फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ॥
फरीद कहते हैं अगर आप समझदार हैं, तो काले नकारात्मक शब्द न लिखें। इसका मतलब है कि अगर आप समझदार और विनम्र हैं तो दूसरों की बुराई करने और उनपर राय बनाने से बचें।

आपनड़े गिरीवान महि सिरु नींवां करि देखु ॥६॥
इसके बजाय, विनम्रता के साथ अपने भीतर देखें। यह दूसरों की आलोचना करने से पहले अपनी कमज़ोरियों पर विचार करने की सलाह का प्रतिनिधित्व करता है। (६)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद आत्म-चिंतन और आत्म-जागरूकता के महत्व पर ज़ोर देते हैं और लोगों से दूसरों पर निर्णय देने से पहले अपनी कमियों और दोषों की जांच करने का आग्रह करते हैं। उनकी सलाह हमें उस कहावत की याद दिलाती है कि जब हम किसी और की ओर उंगली उठाते हैं, तब बाक़ी की उंगलियां खुद हमारी ओर इशारा करती हैं।

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com